DAINIK JAGRAN, Lucknow, 5.10.2017
Page No. 10, Size:(21.06)cms X (10.93)cms.

आधार कार्ड से मिला जिंदगी को आधार

राफिया नाज ● लखनऊ

आधार के जरिये विक्षिप्त और मूक-बधिर महिलाएं मिलीं अपने परिवार से, तीन से चार माह में परिवारीजनों से मिलवाई गईं निराश्रित महिलाएं

घर से बिछड़ चुकीं जन्म से ही सुनने और बोलने से अक्षम और विक्षिप्त तीन महिलाओं की मायूसी भरी जिंदगी को आधार कार्ड ने खुशियों से भर दिया। किन्हीं कारणों से अपनों से बिछड़ीं ये महिलाएं घनघोर निराशा में अपनी जिंदगी के दिन काट रही थीं, लेकिन कहते हैं कि खुदा की रहमत से कभी मायूस नहीं होना चाहिए। ऐसे ही इन महिलाओं को अपने से मिलाने का जरिया आधार कार्ड बनकर आया। राजकीय महिला शरणालय और संवासिनी गृह में इन तीन महिलाओं को केवल आधार कार्ड के जरिये उनके परिवारीजनों से मिलाया गया।

भाई को देखकर किया कलाई पर इशारा : बोलने और सुनने से महरूम गंगा (लालसा) ने एक अरसे बाद अपने भाई को देखा तो उसकी आंखों से आंसू थम नहीं पा रहे थे। अपनी कलाई की ओर राखी बांधने का इशारा करते हुए उसने अपनी खामोश बोली से भाई को पुकारा।

राजकीय महिला शरणालय संवासिनी गृह में मंगलवार को दिल छू लेने वाले इस नजारे को देखकर वहां खड़े सभी लोगों की आंखें नम हो गईं। लगभग चार माह पहले जिला मजिस्ट्रेट मोहनलालगंज की ओर से भेजी गई गंगा (लालसा) रेलवे स्टेशन के पास मिली। मऊ से अपने पूरे परिवार के साथ शादी में जा रही गंगा ट्रेन से छूट गई थी। गंगा को लेने उसके परिवार से भाई आए।

बिहार से गायब होकर लखनऊ में मिली : मानसिक रूप से विक्षिप्त 19 वर्षीय उर्मिला को अपर नगर मजिस्ट्रेट ने संवासिनी गृह भेजा था। वह आशियाना में लावारिस हालत में मिली थी। संवासिनी गृह के प्रयासों से आधार से ट्रेस किया गया तो पता चला कि उर्मिला बिहार के बक्सर की रहने वाली है। संवासिनी गृह की

संवासिनी गृह में लालसा व राबिया को परिवारीजनों से मिलवातीं आरती सिंह

अध्यक्ष आरती सिंह ने बताया कि माता-पिता राजधानी पहुंच पाने में असमर्थ थे इसलिए उसे सेना के साथ एक दो दिन में बिहार भेजा जाएगा।

बाढ़ ने रोका रास्ता : थाना कमतापुर पर मिली 25 वर्षीय सरजू (राबिया खातून) गत वर्ष 18 अक्टूबर को संवासिनी गृह में आई थी। आधार कार्ड से पता चला कि वो महाराजगंज की रहने वाली है। पति भी मूक बधिर है, ट्रेन से कहीं जाते समय वो छूट गई थी। पता चलने पर परिवारीजन उसे ले जाना चाहते थे, लेकिन बाढ़ की वजह से नहीं आ सके। आरती सिंह ने बताया कि शनिवार को फोर्स के जरिये उसे उसके घर पहुंचाया जाएगा।

काफी प्रयास के बाद मिला पता : राजकीय शरणालय संवासिनी गृह में 71 महिलाएं और युवतियां रह रही हैं। इसमें वर्तमान में केवल 12 निराश्रित महिलाएं थीं। जिनमें चार के घर का पता चल गया है। आरती सिंह ने बताया कि शरणालय में समय-समय पर यहां रहने वाली लड़कियों का आधार कार्ड बनता है। सितंबर माह में जब आधार कार्ड बनाया गया तो पांच लड़कियों की आधार स्लिप नहीं आई। बाद में जब कार्वी से पूछा गया तो पता चला कि इनका आधार कार्ड पहले से बना है। आरती सिंह ने बताया कि इसके बाद हमने यूआइडी मुख्यालय में संपर्क किया, जहां से इनके आधार कार्ड और पूरी डिटेल निकली। पांच में से तीन महिलाओं के घर से संपर्क हो गया और इसमें से दो को उनके परिवारीजनों के सिपुर्द कर दिया गया। वहीं एक को फोर्स के साथ शनिवार तक उसके गांव पहुंचा दिया जाएगा।

आधार बनने से मिली राहत

आरती सिंह ने कहा कि आधार कार्ड हर एक को बनाना चाहिए, इसके बहुत फायदे हैं। जब तक हमारे पास आधार कार्ड नहीं था तब तक हम काउंसलर और मनोचिकित्सक की मदद से मूक बधिर और विक्षिप्त महिलाओं की भाषा समझने का प्रयास करते थे। उन्हें साइन लैंग्वेज सिखाते थे, जिससे वो कुछ लिख पढ़कर अपना पता बता दें। वहीं आधार कार्ड बनने के बाद से यह काम बहुत आसान हो गया है। अभी दो लड़कियों की आधार स्लिप नहीं मिली है। हमें उम्मीद है कि उनका भी पता जल्द ही चल जाएगा।